रिपब्लिक ऑफ कोरिया के विद्यालयों में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी पढ़ाने की योजना के लिए पाठ्यचर्या की रूपरेखा

डॉ. संजय कुमार सुमन
प्रोफेसर, हिंदी, भाषा शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,

विषयवस्तु

1. परिचय
2. पाठ्यचर्या को क्रियान्वित करने के लिए महत्त्वपूर्ण विचार
   i. प्रारंभिक स्तर के शिक्षार्थियों की विशेषताओं पर विशेष ध्यान
   ii. संप्रेषणपरक भाषा अधिग्रहण और शिक्षण
   iii. शिक्षार्थी का वैयक्तिक वैशिष्ट्य
   iv. अन्तर्सांस्कृतिक जागरूकता
   v. जीवनपर्यंत शिक्षण
   vi. अन्य विषयक संबंध
   vii. बहुभाषिकता और मानवतावादी पद्धति
   viii. रचनात्मक भाषा शिक्षण सिद्धांत
3. सामान्य लक्ष्य और उद्देश्य
4. प्रस्तावित शिक्षण पद्धति
5. आकलन और मूल्यांकन
6. पाठ्यक्रम

परिचय

"The acquisition of a foreign language must become part of the basic literacy of the child on a par with reading and writing. It is argued that the traditional point of view of primary education as vernacular education is unrealistics, because even by a narrow definition of bilingualism at least half of the world's population is bilingual: and in any case everyone lives in a world in which many different languages are spoken and therefore it is not defensible to create through education a rigidity monolinguistics setting. If education has to reflect the realities with which we have to live, other languages and other cultures should impinge on children from the earliest stage of formal education." H.H.Stern 1969. P26. Foreign Language Education in primary schools, edited by Peter Doye and Alison, Hurrell, Education Committees, Councils for Cultural Co-operation, Council of Europe Press, 1997

मनुष्य को एक से अधिक दृष्टिकोणों से देखने की क्षमता की आवश्यकता होती है। इसलिए एक से अधिक भाषाओं को जानने की आवश्यकता पड़ी। वर्तमान आधुनिक, गतिशील, प्रतियोगितापूर्ण और तीव्रगति से परिवर्तित वैश्विक समाज में अपने आपसी संप्रेषण और आवश्यक दूसरे सामाजिक समूहों के साथ तालमेल बिठाने के साथ भाषिक समानता और बहुभाषिकता को प्रोन्नत करने के दृष्टिकोण से भी विदेशी भाषाओं को सीखने-सिखाने की अनिवार्य आवश्यकता है। दूसरों के साथ

रिपब्लिक ऑफ कोरिया के विद्यालयों में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी पढ़ाने की योजना के लिए पाठ्यचर्या की रूपरेखा

The general goals of Korea's education stated in the Education Law are, under the ideal of 'hongikinkan' (a man contributing to the overall benefit of humankind— the founding spirit of the first kingdom in Korean history) , to assist all people: to discipline themselves as well-developed persons, to lead a humane life through developing the ability for independent life and democratic citizenship, and to contribute for developing the nation as a democratic state, and for promoting the prosperity of all humankind.

On the basis of the stated ideals of education, the well-educated person targeted by the national curriculum is defined as follows:

1. A person who seeks to develop his/her own individuality on the basis of well-rounded and wholesome development;
2. A person who demonstrates creative ability on the basis of a solid grounding in basic knowledge and skills;

3. A person who explores career paths on the basis of broad intellectual knowledge and skills in diverse academic disciplines;
4. A person who creates new values on the basis of understanding of the national culture; and
5. A person who contributes to the development of the community where he/she lives, on the basis of democratic citizenship.

The primary school education puts emphasis on helping students acquire basic abilities, skills and habits essential for learning and daily life. The secondary school education pts more emphasis on the democratic citizenship and career education on the basis of the primary education. (Reference: An International Comparative Study of School Curriculum, National Institute for Educational Research (NIER), 1999)

इस पाठ्यचर्या का उद्देश्य कोरिया के विद्यालयों में हिंदी को विदेशी भाषा के रूप में प्रभावपूर्ण ढंग से पढ़ने-पढ़ाने की रूपरेखा प्रदान करना है। इस प्रस्तावित पाठ्यचर्या में निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार किया जायेगा-

- पाठ्यचर्या को क्रियान्वित करने के लिए महत्त्वपूर्ण विचार।
- सामान्य लक्ष्य और उद्देश्य।
- पाठ्यचर्या को सफलतापूर्वक क्रियान्वित किए जाने के तरीके/पद्धति।
- आकलन और मूल्यांकन।

पाठ्यचर्या को क्रियान्वित करने के लिए महत्त्वपूर्ण विचार

"भाषा और सीखने (भाषिक और अधिगम) से संबंधित सिद्धातों ने समय के साथ-साथ इतनी सारे विधियाँ उत्पन्न की हैं कि आश्चर्य होता है बात चाहे मातृभाषा सीखने की हो या दूसरी भाषा या फिर विदेशी भाषा सीखने की। उनमें से प्रमुख हैं– पारंपरिक व्याकरण अनुवाद विधि, प्रत्यक्ष तरीका, ऑडियो-लिंगुअल एप्रोच, कम्युनिकेटिव एप्रोच (बातचीत-आधारित संप्रेषणात्मक विधि), कंप्यूटर-एडेड लैंग्वेज टीचिंग (सी.ए.एल.टी.), कम्यूनिटी लैंग्वेज लर्निंग (सी.एल.एल.), साइलेंट वे, सजेस्टो-पेडिया और टोटल फीजिकल रिस्पांस (टी.पी.आर.) एव क्राषेन को मॉनिटर व शूमैन का एकल्चरेशन मॉडल। उदाहरण के लिए लिटिलवुड 1981, ब्रमफिट 1980, ब्रमफिट एवं जॉनसन 1979, एंथोनी 1972 को देखा जा सकता है।

1. ***प्रारंभिक स्तर के शिक्षार्थियों की विशेषताओं पर विशेष ध्यान:***

(चॉमस्की 1957, 1965, 1986 1988, 1993) पर्याप्त अवसर मिले तो बच्चा नयी भाषाओं को आसानी से सीखेगा, शिक्षण का फोकस व्याकरण पर न होकर विषय-वस्तु पर होना चाहिए । भाषा अपने आप में परिवर्तनशील होती है और अलग-अलग ढंग से प्रयुक्त की जाती है (लैबोव 1966, ट्रडगिल 1974, गुंपर्ज और हाइम्स 1972, गुंपर्ज 1974 1974, हैबर मास 1970,1996)।

औरोरिन (1977) ने कहा है कि– "भाषा का अस्तित्व एवं विकास समाजके बाहर नहीं हो सकता। भाषा का विकास हमारी सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक विकास की जरूरतों से ही उद्दीप्त होता है, लेकिन इसके विपरीत भी उतना ही सच हैं अर्थात भाषा भी उद्दीपन करने वाले इन कारकों को उद्दीप्त करती है। मानव समाज भाषा के बिना नहीं चल सकता क्योंकि यह संप्रेषण

2. ***संप्रेषणपरक भाषा अधिग्रहण और शिक्षण:*** जैसा कि रिचर्डस् और रोजर ने भी कहा है कि “ Communicative Language Teaching is therefore, an approach (and not a method) that aims to (a) make communicative competence the goel of language teaching and (b) develop procedures for the teaching of the four language skills that acknowledge the interdependence of language and communication. (Richords and Rodgers, 2001, P.155)

नुनान और लैम्ब के अनुसार – “Learners language skills develop through the learners actively using and reflecting on the language inside and outside the classroom”

हैबरमास कहते हैं कि "संप्रेषणात्मक क्षमता परस्पर समझ को

3. ***शिक्षार्थी का वैयक्तिक वैशिष्ट्य:*** यह पाठ्यचर्या शिक्षार्थियों की विभिन्न तरह की आवश्यकताओं को ध्यान में रखती हैं क्योंकि इसमें शिक्षार्थियों की अलग-अलग विशेषताओं को भी ध्यान में रखा गया है। साथ ही यह एकीकृत रूप में सभी तरह के तरीकों को समाहित करने वाली व्यावहारिक पाठ्यचर्या होने का भी दावा करती है। यह शिक्षार्थियों को सीखने वाली आवश्यकताओं के लिए खास तौर पर सीखने की शैली (दृश्यगत, श्रव्यगत) या खास प्रकार के क्षमताओं के युग्मों के प्रति संवेदनशील बनाती है। इसलिए गार्डनर के 'बहुद्देश्यीय प्रतिभाओं/क्षमताओं वाला सिद्धांत' को भी मानकर चलती है, जहाँ उनका मानना है कि शुरूआत में प्रत्येक व्यक्ति दुनिया को अलग ढंग से समझता है और अलग ढंग से देखता है। इसलिए सभी शिक्षार्थी एक ढंग से नहीं सीखते।

कुछ विशेष तरह के वैयक्तिक शिक्षार्थियों की समझ को आगे बढ़ाने का प्रयास कक्षा के एक कोने में स्थायी रूप से विशेष क्रियाकलाप वाला कोना बना कर किया जा सकता है। वहाँ बच्चों की क्षमता को उनकी रूचि और रूझान के अनुसार स्वतंत्र रूप से विकसित होने के लिए

4. ***अन्तर्सांस्कृतिक जागरूकता:*** "कोई भी व्यक्ति अपने व्यवहार के पैटर्न को उस समुदाय के संदर्भ में ही ढालता है, जिससे वह सामीप्य स्थापित करना चाहता है या महसूस करता है। इस क्रम में वह संप्रेषणात्मक योग्यता भी विकसित करता है, जो उसे औपचारिक से अनौपचारिक भाषा की दुनिया में आवगमन के योग्य बनाती है।' (ली पेज और टैबुरेट – केलर 1985, लैबोव 1966,1971)।"(*भारतीय भाषाओं का शिक्षण, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधारपत्र, रा.शै.अ.एवं प्र.प., पृ.5*)

यहाँ Van EK 1986, P-35 के कथनों पर भी ध्यान दिया जा सकता है। जहाँ उन्होंने कहा है कि "The use of particular language implies the use of a reference from which is at least partly determined by the socio-cultural context in which that language is used by native speakers. Competent use of that language, then presupposes a

5. ***जीवनपर्यंत शिक्षण:*** आज बदलती दुनिया में व्यापक स्तर पर शिक्षा का उद्देश्य भी व्यापक हो गया है। अब शिक्षकों समेत शिक्षार्थी और शिक्षार्थियों के माता-पिता के लिए भी जीवनपर्यंत शिक्षण एक महत्वपूर्ण और आवश्यक उद्देश्य हो गया है। अपने सफल भविष्य के लिए कैसे सीखा जाए को सीखना आज आधुनिक वैश्विक समाज और उसके नागरिकों का एक महत्वपूर्ण कौशल माना जाता है। इसलिए प्रगतिशील और बहुआयामी लोगों के लिए यह समय की आवश्यकता है। यह पाठ्यचर्या कैसे सीखा जाए को सीखने और सिखाने पर ध्यान देती है। यह सक्रिय रूप से सीखने वालों की स्वायत्ता का संवर्धन करती है और आवश्यकतानुसार उपयुक्त कौशलों के सीखने के उद्देश्य को पूरा करने में सहायक हैं। इस के लिए सामान्य तौर पर शब्दकोश का उपयोग, व्याइसमेल का

6. ***अन्य विषयक संबंध:*** “Integration of language learning with other school subject can offer benefits to all arias of the curriculum as well as reinforce children’s conceptual developments and help them see connections between the foreign language and other aspects of their learning” (Doye and Hurrell, 1997). I अत: कहा जा सकता है कि यह अन्य विषयक संबंध वाली सीखने-सिखाने की प्रक्रिया एकीकृत विषयवस्तु और भाषा सीखने की पद्धति में बहुत ही सहायक है जो आज पूरी दुनिया में, खासकर यूरोप में बहुत ही लोकप्रिय और प्रासंगिक मानी जा रही है।

7. ***बहुभाषिकता और मानवतावादी पद्धति:*** आज के उदारीकृत वैश्विक व्यवस्था में सभी के साथ और साझेदारी से ही अपने देश और विश्व का कार्य किया जा सकता है। विविधताओं से भरी हुई दुनिया में एक साथ होकर विचारों के स्वतंत्र आदान-प्रदान को बढ़ावा देकर न केवल रचनात्मकता को बढ़ावा दिया जा सकता है।

बहुभाषिकता, संज्ञानात्मक विकास और शैक्षणिक संप्राप्ति के बीच सकारात्मक संबंध होता है। इसलिए विदेशी भाषा शिक्षण में बहुभाषी शिक्षण को मानवतावादी, नवाचारीऔर उपुर्यक्त् पद्धति माना जा सकता है। इसी को प्राथमिक स्तर पर प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए।

8. ***रचनात्मक भाषा शिक्षण सिद्धांत:*** अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में रचनात्मक भाषा सिद्धांत एक प्रतिमान के रूप में कोरिया में भी बहुत ही अधिक लोकप्रिय है। इसका मूल विचार है कि किसी भी मनुष्य के लिए यह असंभव है कि वह किसी सत्य को वस्तु के रूप में प्राप्त करें। हाँ वह अपने अनुभवों के आधार पर अपनी मानसिक योजना के अनुसार किसी सत्य की रचनाकर सकता है। इसमें उसका पूर्वज्ञान और उसके सामाजिक संदर्भों से जुड़ी बातचीत सबका अनुभव शामिल हो जाता है। यदि हमारे विचार, अवधारणाएँ या सिद्धांत इस तरह से रचे और तैयार किए जाएं जो संरक्षित रह सके और हमारे अनुभवों के साथ समावेशित हो जाएं

इस तरह हम अधिग्रहण की प्रक्रिया में पाते हैं कि समूह नहीं व्यक्ति सीखता है। जबकि सीखनेवाला व्यक्ति समूह का हिस्सा होता है। सामाजिक संदर्भ और परिवेश सीखनेवाला की सहायता करता है। इसी परिवेश में सिखाने वाले की भूमिका में शिक्षक होते है जो सहयोगी के रूप में कार्य करते हैं। इसमें संज्ञानात्मक संरचना, ज्ञान ग्रहण और कौशल तो वैयक्तिक घटना मात्र ही होती है। रचनात्मकता ने अतिरिक्त खोज की दिशा में भी रास्ता दिखाने का कार्य किया है क्योंकि ऐसा पाया गया है कि बच्चे जब साथ-साथ अभ्यास/कार्य करते हैं तो उन्हें ज्यादा फायदा होता है। इसमें वे अपने साथियों को प्रतिस्पर्धी के रूप में नहीं बल्कि सहयोगी के रूप में लेते हैं। आज भाषा शिक्षण के क्षेत्र में भी यह लोकप्रिय हो रहा है। हालांकि सभी विधियों के अपने-अपने गुण एवं दोष है। हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि इनमें से

सामान्य लक्ष्य

Foreign Language Learning enhance the child's Ability to communicate, to listen and react. He becomes more self confident through development of personal and social skills. Through learning a foreign language he gains an awareness of his mother tongue. Furthermore he is after to distinguish different sounds, rhythms and cadences. The child becomes highly motivated to discover the wider world around him. Foreign Language Learning and Teaching can also be understand as fun and laughter therapy". (Hurrell 1995-72) foreign language education in primary schools. (age 5/6 to 11/12) Edited by Peter Doye and

उद्देश्य

यूरोप और यूरोप के बाहर के लिए यूरोपीयन काउंसिल (2001) द्वारा 'कॉमन यूरोपियन ऑफ रेफेरेन्स फोर लैंग्वेजेज' (सी.ई.एफ.) में भाषिक लक्ष्य और उसके स्तरों को उल्लेखित और प्रस्तावित किया गया है। अत: प्राथमिक स्तर के अंत तक शिक्षार्थियों के चारों कौशलों के स्तरों में वैसे ही प्रस्तावित विकास को एक अपेक्षित स्तर के लिए अनिवार्य माना जा सकता है। संदर्भ के लिए कॉमन यूरोपियन ऑफ रेफेरेन्स फोर लैंग्वेजेज (सी.ई.एफ.)[1] को देखा जा सकता है जिसमें तीन आदर्श स्तर निर्धारित किए गए हैं। ए-बेसिक यूजर (बुनियादी प्रयोगकर्ता), बी-इन्डेपेन्डेन्ट यूजर (स्वतंत्र प्रयोगकर्ता) और सी-प्रोफेशियन्ट यूजर (प्रवीण प्रयोगकर्ता)। प्रत्येक स्तर को दो अन्य उपस्तरों में विभाजित किया गया है। वहाँ आशा की गयी है कि सभी बच्चों के सामान्य भाषिक कौशलों का विकास ए-1 स्तर पर ही आदर्श रूप में हो जाता है। विशेषकर मूल रूप से जर्मन भाषा-भाषी बच्चों के हिंदी भाषा ज्ञान के लिए प्रारंभिक स्तर को ए-1 स्तर तक पूरा किया जा सकता है और इसके बाद उन्हें ए-

ए-1 स्तर के लिए

पठन कौशल

सामान्य संदर्भों से जुड़े संदर्भों को पढ़ना। समाचारों, पोस्टकार्ड, परिचित नामों और शब्दों से संबंधित टिप्पणी, दृश्य सामग्रियों के आधार पर सामान्य सूचनाओं और सामान्य निर्देशों को पढ़ पाना।

लेखन कौशल

स्वयं और दूसरों के बारे में साधारण संक्षिप्त और स्वतंत्र शब्दावलियों और वाक्यों को लिखना।

बोलने/वाचन कौशल

- सामान्य स्तर के प्रदर्शनों से संबंधित वैयक्तिक जानकारी, परिचित परिवेश और परिचित लोगों से संबंधित शब्दों और शब्दावलियों को बोलने में कुशलता ग्रहण करना
- साधारण व्याकरणिक संरचना और वाक्य संरचना पर बोलने में सीमित नियंत्रण हासिल करना

श्रवण कौशल

तात्कालिक संदर्भानुसार प्रसंग अनुकूल क्षेत्रों से संबद्ध सभी तरह के वाक्यों को समझने की कोशिश करना। धीमी आवाज़ में कहे गए और सावधानीपूर्वक कहे गए वाक्यों को समझने की कोशिश करना।

साधारण निर्देशों और संकेतों को समझना और उनके अनुसार प्रतिक्रिया करने की कुशलता हासिल करना।

उसके समान 'और', 'लेकिन', 'क्योंकि', जैसे संबंधबोधक/योजकों का प्रयोग शब्द समूहों के जोड़-तोड़ के लिए साधारण रूप में कर पाना ।

ए-2 स्तर के लिए

पठन कौशल

छोटे,सरल और सहज शब्दों और संदर्भों को जो दैनिक जीवन में उपयोगी हों, को पढ़ सकेंगे जैसे पत्र, आदेश, जाँच, विज्ञप्ति, सूची, समय-सारणी, चिह्न और सूचनाएँ आदि ।

- ऊपर लिखित सभी सामग्रियों पर आधारित सूचनाओं की पहचान और प्रयोग करने में सक्षम हो सकेंगे ।

लेखन कौशल

सामान्य संबंधबोधक/योजकों के साथ वाक्यों और शब्दों की श्रेणियों को जोड़कर लिखने में कुशलता हासिल कर पाएंगे। जैसे कि स्वयं और दूसरों के साथ, परिवार और तात्कालीन परिस्थितियों के अनुसार घटनाओं, क्रियाकलापों और अनुभवों को लिखकर अभिव्यक्त करने में सक्षम हो सकेंगे ।

बोलने/वाचन कौशल

- दैनिक व्यवहार के लिए सीमित साधारण सूचनाओं के लिए याद किए हुए शब्द/वाक्य/शब्दों को अभिव्यक्त करना जैसे लोगों, परिवार, नज़दीक का परिवेश, पसंद, नापसंद, दैनिक नियमावली, स्थिति आदि के बारे में बातचीत
- साधारण संरचनाओं का सही-सही प्रयोग करना लेकिन यह आशा की जाती है कि इसमें नियमत: वे बुनियादी तौर पर होनेवाली कुछ भूलें कर सकते हैं ।जिसको शुरूआत में गंभीरता से नहीं लिया जाना चाहिए।
- छोटे-छोटे प्रत्युत्तरों को वे अपने आप समझ सकते हैं लेकिन उनमें तारतम्यता अभी भी नही होगी।
- सामान्य कथनों के लिए प्रश्न-उत्तर कर सकते हैं लेकिन बातचीत के लिए वे अपने अनुसार ही अपने ऊपर निर्भर हो पाने में सक्षम अपेक्षाकृत नहीं होगें।

प्रस्तावित शिक्षण पद्धति

"हम समग्रतावादी दृष्टिकोण अपनाने की बात करते हैं क्योंकि जब हम बोल रहे होते हैं तो तभी सुन भी रहे होते है और जब हम लिख भी रहे होते है तभी पढ़ भी रहे होते है। साथ ही कई परिस्थितियाँ ऐसी भी होती है (जैसे मित्र मिल जुलकर नाटक पढ़ रहे होते हैं और इसके लिए कुछ नोट करते हैं) जिसमें हमारी भाषा क्षमता के सभी पहलू और संज्ञानात्मक योग्यताएँ एक साथ काम कर रही होती है।" (*भारतीय भाषाओं का शिक्षण, आधारपत्र, पृ.10*)

आकलन और मूल्यांकन

बच्चों को प्रोत्साहित करने वाला वातावरण बनाना शिक्षक का प्राथमिक दायित्व होता है क्योंकि गीत, खेलकूद, पहेलियाँ, नाटक और चित्रकारी आदि कक्षा में भाषा सीखने के संसाधन के तौर पर प्रयोग किये जा सकते हैं। इसलिए भाषिक कौशलों के स्तर को जाँचने-परखने में शिक्षकों को सौहार्दपूर्ण, सक्रिय,सहयोगी और मित्रतावाले सकारात्मक भूमिका को अपनाने की जरूरत है। इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विदेशी भाषा सीखने-सिखाने के दौरान जो जाँच की गतिविधियाँ प्रचलन

परियोजना कार्य, गृहकार्य, पोर्ट फोलियों का मूल्यांकन, स्व-मूल्यांकन और साथी द्वारा मूल्यांकन जैसे क्रियाकलापों का सतत और समग्र मूल्यांकन करते रहना चाहिए । मूल्यांकन के दौरान कक्षा के सकारात्मक पढ़ने-लिखने के वातावरण पर दुष्प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए क्योंकि सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक सहयोगी और साथी की भूमिका में होते हैं। स्वतंत्र सीखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहन देने के लिए जरूरी है कि विद्यार्थियों की आजादी में खलल न पड़े। योगात्मक मूल्यांकन का लक्ष्य सीखने के स्तर की जो ईकाई है उसके अंत में मूल्यांकन होता है जिसमें अगले सीखने के स्तर की ईकाई के बारे में कोई दिश-निर्देश नहीं दिया जाता और रचनात्मक मूल्यांकन का लक्ष्य सीखने और पढ़ने के लिए दिशानिर्देश भी दिया जाना होता है। सामान्य तौर पर कोरिया के सभी प्रांतों के प्राथमिक विद्याथियों में मूल्यांकन के लिए ग्रेड पद्धति है और उसमें 1 से 6 तक के ग्रेड की व्यवस्था है। साथ ही शुरूआत के पहले वर्ष में मूल्यांकन का प्रावधान नहीं है । हाँ

विद्यालयों में हिंदी को विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम

वर्ष 1

इस पाठ्यक्रम में भाषाशिक्षण के प्रारंभिक स्तर के बाद के स्तरों में जो सीखने-सिखाने के लिए विषय-वस्तुएं हो सकते हैं, को प्रस्तावित किया जाएगा। उसमें से बहुतों को बारंबार और लगातार अधिगम लक्ष्य के तहत, रखकर दुहराने का प्रस्ताव होगा। इससे भाषा के प्रस्तावित विषय-वस्तुओं को सीखने में सहुलियत होगी क्योंकि उससे विद्यार्थी का बार-बार सामना होगा। संवाद और बातचीत के दौरान उन विषय-वस्तुओं को भी दुबारा संप्रेषित करने से बच्चे को विदेशी भाषा सीखने में सफलता मिल सकती है।

- भाषा सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद मिल सकती है

- बच्चो के संज्ञानात्मक कौशल के विकास में भी सहायता मिल सकती है जिससे विद्यालयी स्तर पर अन्य विषयों कों पढ़ाने मे भी सहयोग मिल सकता है ।
- दैनिक जीवन में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी में समझने तथा बोलने की क्षमता का विकास हो सकता है।

इसलिए इस स्तर पर संप्रेषणात्मक लक्ष्य और उसके लिए प्राभावित मौखिक संरचना निम्न हो सकते हैं

संप्रेषणात्मक लक्ष्य	**मौखिक संरचना**
लोगों का अभिवादन करना	ऐ, ओ, रे, अरे, अच्छा ठीक है, कैसे हैं?, क्या हाल हैं? फिर मिलेंगें, हाँ, ना
अपने आप का परिचय देना	मै हूं + संजय मैं + संजय + हूँ मेरा नाम संजय है तुम्हारा नाम क्या है?

शरीर के अंगों का नाम बताना	सिर, पैर, हाथ, शरीर आदि।
निर्देशों के अनुसार जवाब देना	खड़े हो। बैठो। ताली बजा। ताली बजाओ। खड़े हो जाओ। बैठ जाओ। ताली बजाइये। खड़े हो जाइए। बैठ जाइए।
रंगों की पहचान	यह कौन-सा रंग है? लाल, नीला, पीला, हरा, सफेद आदि।
गिनती	संख्याँ 1,2,3,4,5
लोगों की पहचान	यह कौन है? यह सुमन है।
परिवार के सदस्यों का परिचय कराना	यह मेरी माँ है। यह मेरे पिताजी हैं । वह मेरी बहन है । वह मेरा भाई है। वे मेरी दादीजी हैं। वे दादाजी हैं।

Cont....

अनुमान लगाना	यह …….. है । हाँ/ ना
अपनी स्थिति जाहिर करना	मेरे पास आईपेड है । यह मेरा टेबलेट है । वह तुम्हारा कुत्ता है।
अपनी पसंद बताना	मैं हरी सब्जी पसंद करता हूँ । मुझे हरी सब्जी पसंद है । मुझे दूध पसंद है । मुझको दूध पसंद है ।
होली, दिवाली, दशहरे और ईद तथा क्रिसमस पर बधाई देना	होली मुबारक हो । शुभ दिवाली । दशहरा मुबारक हो ।ईद मुबारक हो । हैप्पी क्रिसमस ।
जन्म दिन की बधाई देना	जन्म दिन शुभ हो । जन्मदिन मुबारक हो ।

शिक्षण सामग्री

"कोई भी चीज जो विदेशी भाषा के रूप में हिंदी सीखने में सहायक हो, सामग्री कही जा सकती है । वे भाषिक, दृश्य, श्रव्य या काइनेस्थेटिक हो सकते हैं, या प्रिंट, प्रदर्शन या डिसप्ले के माध्यम से प्रस्तुत किए जा सकते हैं या कैसेट, सी.डी.रोम, डी.वी.डी. अथवा इण्टरनेट के माध्यम से । वे सूचनात्मक प्रयोग परक, उद्यत पटक । इलिसिटैटिव और खोज परक हो सकते हैं, क्योंकि वे क्रमश: भाषा के बारे में सूचना देते हैं, भाषा से परिचय कराते हैं, भाषा प्रयोग करने को उद्दुत करते हैं और भाषा प्रयोग के क्षेत्र में अनुवेषण कराते हैं।" (टॉमलिन सॉन 2001: 66, *भारतीय भाषाओं का शिक्षण, आधार-पत्र, एन.सी.ई.आर.टी. पृ. 24)*

अधिकतर पाठ्यपुस्तकें उस अधिगम का अनुसरण करती हैं जिसमें शिक्षण आधारित आधार रूप के लिए संप्रेषणात्मक शिक्षण को

लेकिन वे पाठय-पुस्तक लेखक जो क्राषेण (1982, 1988) आदि जैसे शोधकत्ताओं के सिद्धांतों से प्रभावित है, ने ऐसी सामग्रियाँ निर्मित की है जिनका उद्देश्य संप्रेषणात्मक क्रियाकलापों जैसे- वहस, परियोजना,खेल,स्वांग और नाटक आदि के माध्यम से संवाद क्षमता के अनौपचारिक अभिग्रेहण को सहज बनाना (देखें ला डोउस्से 1983: क्लीपेल 1984)। कुछ शोधकर्ता अभ्यास या पाठ के आधार पर भाषा की अनुभूति पर बल देते हैं (देखेंजे. विलिस1996), तो कुछ अनुभव के साथ-साथ भाषा के प्रति जागरूकता परक कार्यकलापों पर भी बल देते हैं। (टॉमलिन सॉन 1994) ।

शिक्षकों की तैयारी

कोरिया में प्राथमिक स्तर पर विदेशी भाषा पढ़ाने के लिए शिक्षकों को कोरिया में स्थित शिक्षक-प्रशिक्षणा संस्थानों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। विषय-वस्तु आधारित भाषा शिक्षण जो कोरिया में लोकप्रिय है, से हिंदी-भाषा को जोड़कर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम दुरूस्त किया जा सकता है। पाठ्य-पुस्तक, अतिरिक्त शिक्षण सामग्री और प्रस्तावित संप्रेषणत्मक क्रियाकलापों के लिए शिक्षक की भूमिका बहुत ही महत्वूपर्ण होगी। शिक्षकों का कर्त्तव्य हो कि विद्यार्थियों को सीखी हुई भाषा में संप्रेषणात्मक रूप से सक्षम बनाए। एक सचेत शिक्षक को यह ध्यान रखने की जरूरत है कि कैसे बच्चे की भाषा और सीखी जाने वाली लक्ष्य भाषा के बीच पुल बने। मानक भाषा सीखने की प्रक्रिया में मानकीकरण के आतंक से बच्चों को शुद्धिकरण की